यागस्वरूपविमर्श

बी॰ आचार्य

'यज्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय से 'याग' शब्द निष्पन्न होता है। 'यज्' धातु से 'नङ्' प्रत्यय के योग से 'यज्ञ' शब्द की सिद्धि होती है।

"यजनाद् यागः, इज्यतेऽनेन कर्मणा इति इष्टिः"। "यजतेऽसौ यजमानः" कर्मजन्यफलभोक्ता इति।

"द्रव्यं देवता त्यागः"। का॰ श्रौ॰ सू॰

"देवतामुद्दिश्य दध्यादिद्रव्याणां त्यागः यागः उच्यते।" अर्थात् देवता को उद्देश्य करके स्वत्वनिवृत्ति पूर्वक हविद्रव्यों का त्याग करना ही याग कहलाता है।

वैदिक प्रयोग में "याग" शब्द का ही प्रयोग मिलता है परन्तु लौकिक प्रयोग में "यज्ञ" शब्द का प्रयोग प्रायः सुनने में मिलता है। श्रौतयाग का सांगोपांग विवरण हमें श्रौतसूत्रों एवं ब्राह्मणग्रन्थों में प्राप्त होता है।

"स एष यज्ञः पञ्चविधोऽग्निहोत्रं, दर्शपूर्णमासौ, चातुर्मास्यानि, पशुः सोमः इति" अर्थात् पाँच प्रकार के यज्ञ विवरण प्राप्त होता है।

डॉ॰ श्यामसुन्दर ठाकुर
सहायक आचार्य (वेद)
शिवप्रसाद संस्कृत कॉलेज रामपुर

Scanned with CamScanner